विषय-सूची

1. रस की परिभाषा 1
नाट्य-रस : काव्य-रस : भाव-रस 3
सन्दर्भ 7
2. रस का स्वरूप 9
क्या रस ब्रह्मास्वाद-सहोदर, अनिवार्यतः आनंदरूप और अलौकिक है? 13
सन्दर्भ 19
3. रसास्वाद की प्रक्रिया अथवा रस-निष्पत्ति 21
भट्टलोल्लट के मत पर आक्षेप 23
शंकुक के मत पर आक्षेप 26
सन्दर्भ 31
4. साधारणीकरण 33
परवर्ती आचार्य विशेष द्वारा पूर्ववर्ती आचार्य विशेष के साधारणीकरण-सम्बन्धी मन्तव्य पर आक्षेप और उनका समाधान 33
आचार्य शुक्ल के साधाकरणीकरण-सिद्धांत पर आक्षेप 37
डॉ. नगेन्द्र की साधारणीकरण विषयक मान्यता 37
डॉ. नगेन्द्र की उक्त मान्यता पर आक्षेप 38
किसी अन्य व्यापार को साधारणीकरण के समकक्ष बैठाने के प्रयास के फलस्वरूप 'साधारणीकरण-सिद्धांत' की शास्त्रीय मान्यता पर आक्षेप 39
साधारणीकरण-सिद्धांत को काव्य के लिए अनावश्यक बताते हुए उस पर आक्षेप 40
सन्दर्भ 44
5. मित्र और अमित्र रस 47
सन्दर्भ 49
6. रस-संख्या : एक पुनर्विचार 50
सन्दर्भ 52
7. रसत्व की योग्यता के निर्णायक तत्त्व 54
रस के संख्यान की आवश्यकता और महत्त्व 56
वर्गीकरण का दर्शन, संस्कृति, मनोविज्ञान, परिवेश, युग-बोध आदि के संदर्भ में विवेचन 58
वर्गीकरण के विभिन्न रूप संख्या, कोटि, अवस्था, भेद, प्रकार, अंग, अधिष्ठान आदि 62
आधुनिकयुगीन हिन्दी-आचार्यों का रस-संख्यान : पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता 63
संदर्भ **64**

8. नवीन रसों की स्वीकृति का प्रश्न/अनिवार्यता 65
सन्दर्भ 67
9. प्रकृति-रस 68
आचार्य शुक्ल के मत का परीक्षण 71
रति-भाव में प्रकृति-रस के अंतर्भाव का प्रश्न 75
तुल्यानुराग के अभाव का प्रश्न 76
प्रकृति-रस के अंगित्व का प्रश्न 77
प्रकृति का प्रत्यक्ष रूप-विधान और रसानुभूति 79
प्रकृति की अनेकरूपता और रस 80
अन्य रसों में अन्तर्भाव का प्रश्न 82
आलम्बन प्रकृति-चित्रण की विरलता और रस 86
मराठी काव्यशास्त्र का 'उदात्त रस' और हिन्दी काव्यशास्त्र का 'प्रकृति-रस' 88
प्रकृति-रस का स्वरूप 89
सन्दर्भ 91
10. देशभक्ति रस 94
देशभक्ति : इतिवृत्त और स्वरूप 95
देशभक्ति का स्वतन्त्र रसत्व 105
देशभक्ति रस का स्वरूप 108
11. प्रेयान् (सख्य) रस 111
प्रेयान् के रसत्व का प्रश्न और इस रस का स्वरूप 114
प्रेयान् रस का स्वरूप 117
संदर्भ 118
12. कार्पण्य रस 119
संदर्भ 122
13. विषाद, उद्वेग, प्रक्षोभ आदि रसों के स्वीकार का प्रश्न 123
विषाद रस 123
उद्वेग, प्रक्षोभ और क्रांति रस 125
उद्वेग रस 125
प्रक्षोभ रस 127
क्रांति रस 129
बुद्धि और ऊब रस 131
संदर्भ 135
14. रस-संख्या : संकोच की दिशा 137
षड्रसवाद 137
चार मूल रस 138
तीन रस 143
दो रस 144

एक ही मूल रस की कल्पना 146
'मूल रस' से आशय 146
एको रसः करुण एव 146
शान्तस्तु प्रकृतिर्मतः 150
शृंगारमेव रसनाद्रसमामनामः 152
अहंकार-शृंगार 153
प्रेम रस (प्रेमन् रस) 154
रति शृंगार 155
हिन्दी-काव्यशास्त्र में शृंगार के मूलरसत्व का प्रतिपादन 156
हिन्दी-मराठी काव्यशास्त्र में प्रेम रस 157
शृंगार का मूल रसत्व : विवेचन-विश्लेषण 157
सर्वत्राप्यद्भुतो रस 158
स च रसो भगवद्भक्तिमय एव 160
रस की एकता का प्रतिपादन 162
संदर्भ 163
15. रस-संख्या-विवेचन में हिन्दी-आचार्यों की उपलब्धियां 169
16. अलंकार-सम्प्रदाय और रस 180
अलंकारवादियों का अलंकार के प्रति दृष्टिकोण 180
अलंकारवादी आचार्यों का रस के प्रति दृष्टिकोण 181
अलंकारवादी आचार्यों की ओर से 'रस-सिद्धांत' के विरुद्ध आक्षेप और उसका समाधान 181
संदर्भ 184
17. रीति-सम्प्रदाय और रस 185
आचार्य वामन का रीति के प्रति दृष्टिकोण 185
आचार्य वामन का रस के प्रति दृष्टिकोण 186
आचार्य वामन का रस-सिद्धांत के विरुद्ध आक्षेप और उसका समाधान 187
सन्दर्भ 189
18. ध्वनि-सम्प्रदाय और रस 190
आनन्दवर्धन का ध्वनि-विषयक दृष्टिकोण 190
आनन्दवर्धन का रस-विषयक दृष्टिकोण 191
ध्वनि-सम्प्रदाय की ओर से रस-सिद्धांत के विरुद्ध आक्षेप 192
संदर्भ 194
19. वक्रोक्ति सम्प्रदाय और रस 196
कुन्तक का वक्रोक्ति-विषयक दृष्टिकोण 196
कुन्तक का रस-विषयक दृष्टिकोण 197
कुन्तक की ओर से रस-सिद्धांत के विरुद्ध आक्षेप और उसका समाधान 198

20. औचित्य सिद्धांत और रस 200
क्षेमेन्द्र का रस-विषयक दृष्टिकोण 201
औचित्य-सिद्धांत की ओर से रस-सिद्धांत के विरुद्ध आक्षेप 201
संदर्भ 202
21. नैतिक दृष्टि और रस-सिद्धांत 203
संदर्भ 207
22. आधुनिक मनोविज्ञान और रस-सिद्धांत 209
संदर्भ 217
23. समाजशास्त्रीय दृष्टि और रस-सिद्धांत 220
संदर्भ 236
24. रस-सिद्धांत के विरुद्ध आक्षेप और उनका समाधान **237**
25. नयी कविता और रस-सिद्धांत 244
संदर्भ 264
26. नाटक के तत्त्व एवं रस 266
वस्तु-विधान और रस 269
पात्र और रस 271
संवाद में रस का आधार 274
भाषा-शैली में रस का आधार 275
देश-काल और वातावरण का विधान एवं रस-निष्पत्ति 277
उद्देश्य और रस 278
रंग-दृष्टि और रस 279
संदर्भ 280
27. प्रसाद की रस-चेतना : नाट्य के सन्दर्भ में 283
सन्दर्भ 286
28. पन्त के काव्य-सिद्धांतों में रस-दृष्टि 287
सन्दर्भ 292
29. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का रस-चिन्तन 293
30. मुक्तिबोध का काव्य-चिन्तन और रस-दृष्टि 300
काव्य-सृजन-प्रक्रिया : कला के तीन क्षण 307
सौन्दर्यानुभूति : जीवनानुभव 307
सन्दर्भ 311
31. धर्मवीर भारती का शास्त्र-चिन्तन और रस-दृष्टि 313
सन्दर्भ 318
32. डॉ. कन्हैयालाल सहल की रस-दृष्टि 319
33. काव्य का चिरन्तन प्रतिमान 326
सन्दर्भ 336